बातचीत

न. 09/2025 | भारतीय थलसेना का प्रकाशन | सितम्बर 2025

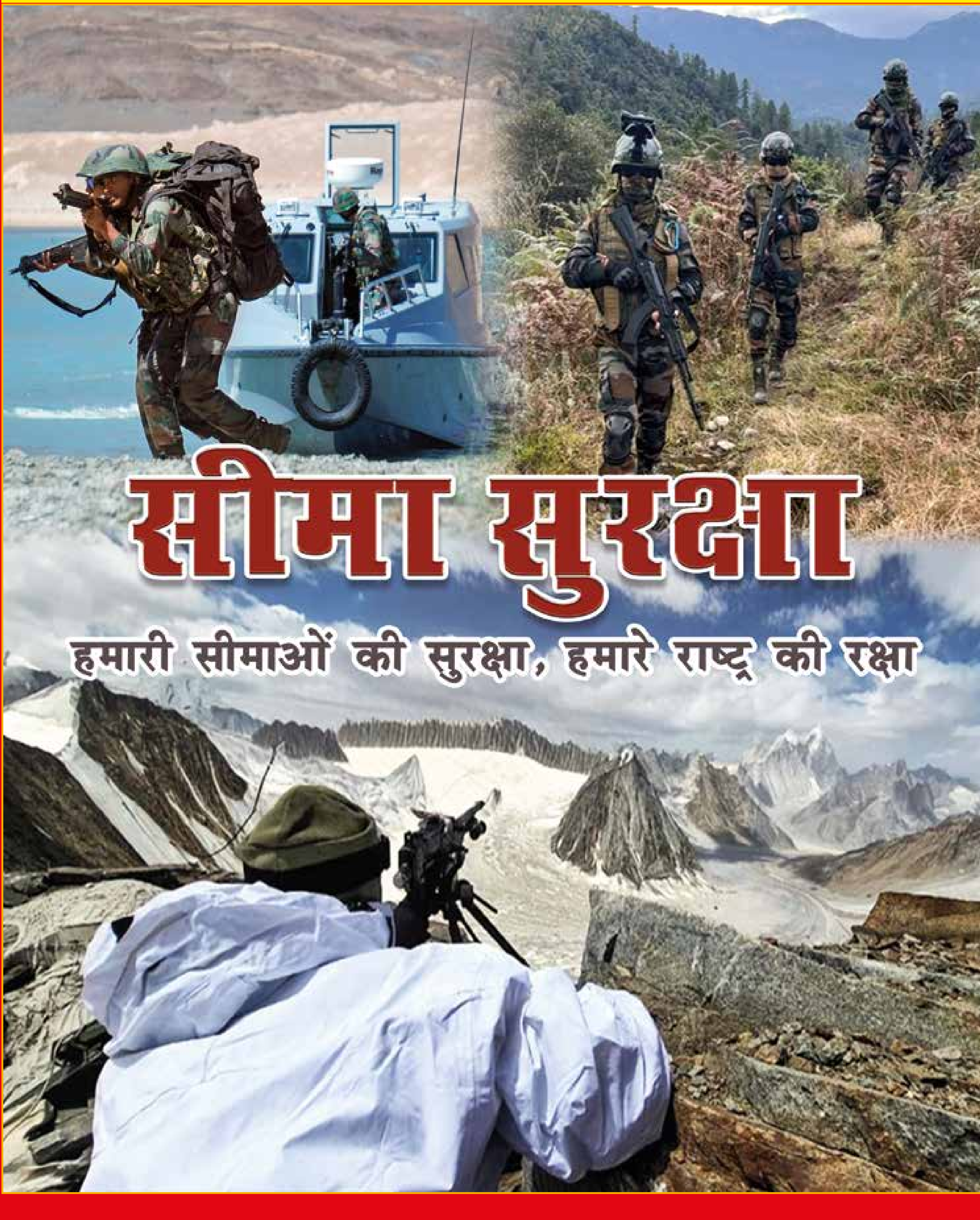

सीमा पर ऑपरेशंस

ऊँचाई वाली जगहों पर नियंत्रण क्षेत्र में गश्ती

दर्रों का नियंत्रण

घुसपैठ विरोधी अभियान

घुसपैठ रोधी बाधा प्रणाली का नियंत्रण

प्रौद्योगिकी और सीमा सुरक्षा

- आधुनिक निगरानी प्रणाली
- ड्रोन निगरानी
- काउंटर ड्रोन प्रणाली

सीमा क्षेत्रों में प्रशिक्षण

ऑपरेशनल रणनीति, प्रशिक्षण मानकों को मान्य करने तथा नई रणनीति, तकनीक एवं प्रक्रियाओं को विकसित करने के लिए भारतीय सेना सीमावर्ती क्षेत्रों में अभ्यास आयोजित करती है। सभी सशस्त्र बलों और सैन्य सेवाओं का एकीकृत प्रशिक्षण यह सुनिश्चित करता है कि ऑपरेशनल योजनाओं के एकीकरण के माध्यम से समग्र रणनीति एवं ऑपरेशनल निर्देशों का पालन करने के साथ-साथ मुख्य कोर के साथ तालमेल स्थापित हो सके।

- टाई-सर्विस
  - ट्राई-सर्विस एक्सरसाइज-2025, ट्राई-सर्विस ईडब्ल्यू एक्सरसाइज
- जल व थल सेना का संयुक्त अभ्यास
  - अभ्यास जलप्रहार, जल एवं थल अभ्यास, टाइगर ट्रूंफ एक्सरसाइज
- एकीकृत प्रशिक्षण क्षेत्र
  - इंटीग्रेटेड ट्रेनिंग एरिया में आक्रमण अभ्यास
- द्वीपशक्ति अभ्यास (26 फरवरी) - मुख्यालय एएनसी

अन्य एजेंसियों के साथ समन्वय

- निगरानी संरचना का एकीकरण
- क्रीक सेक्टर में बेहतर सामंजस्य
- समन्वित ऑपरेशन अलर्ट
- स्पूफर/जैमिंग सिस्टम में बीएसएफ का प्रशिक्षण
- ड्रोन अतिक्रमण और विश्लेषण की जानकारी साझा करना
- संचालनात्मक लॉजिस्टिक्स का एकीकरण

- सभी भागीदारों के साथ मासिक संवाद
- डीजीएमओ व डीजी बीएसएफ के बीच बातचीत
- फील्ड फार्मेशन स्तर पर समान संवाद

फील्ड फार्मेशन पर तालमेल बैठक

संयुक्त निगरानीः बीओपी (बॉर्डर आउटपोस्ट)

स्थानीय एजेंसियों के माध्यम से सुरक्षा को सुदृढ़ करना

- सेना, स्थानीय समुदायों और पुलिस के बीच समन्वय
- संयुक्त गतिविधियों ने सुरक्षा चुनौतियों का त्वरित प्रतिक्रिया में सक्षम बनाया है
- नियमित सूचना साझा करने से खुफिया जानकारी और स्थिति के प्रति जागारूकता में सुधार हुआ है
- आतंकवाद की सफल रोकथाम और शांति स्थापना अभियानों में सहयोग मिला है

बुनियादी ढाँचे का विकास

सड़कें, पुल, सुरंगें, विमानन के बुनियादी ढांचे, बल संरक्षण संसाधनों, गोला-बारूद भंडारण ढांचे और लॉजिस्टिक्स सहित महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे के निर्माण को भारतीय सेना (एआई) द्वारा विशेष रूप से उत्तरी सीमाओं पर प्राथमिकता दे रही है।

सैन्य बल संरक्षण बंकर

शिंकुन्ला सुरंग का उत्तर द्वार

घुसपैठ रोधी बाधा प्रणाली का पुनर्गठन

जमीन पर तैनाती

सीमा पर्यटन

सीमा पर चौकसी से सीमा पर्यटन का मार्ग प्रशस्त होता है

भारत रणभूमि दर्शन वेबसाईट (https://bharatrannbhoomidarshan.gov.in) योजना का शुभारंभ रक्षा मंत्री द्वारा किया गया था। इसे रक्षा मंत्रालय ने भारतीय सेना के सहयोग से विकसित किया है। यह भारत की सैन्य विरासत को उजागर करते हुए उसका वर्चुअल दर्शन कराती है तथा गलवान, डोकलाम और लोंगेवाला सहित 75 से अधिक युद्धों की विस्तृत जानकारी प्रदान करती है। यह योजनाएं राष्ट्रीय गौरव को बढ़ाते हुए वीरता और बलिदान को प्रदर्शित करने के साथ-साथ सीमा क्षेत्रों में सामाजिक आर्थिक विकास को भी प्रोत्साहन प्रदान करती है।

गजराज कोर के संरक्षण में विश्वविद्यालय के छात्रों ने तवांग के मठों और ऊँचे दर्रों की यात्रा की।

सीमा पर्यटन को मजबूत करने के लिए टाइगर डिवीजन द्वारा जवानों और उनके परिवारों को जम्मू के नंदपुर स्थित सीमा गांवों में ले जाया गया।

भारतीय सेना ने उत्तराखंड के गर्ब्यांग गाँव में एक नए समुदाय-संचालित शिविर को शुरू करने के लिए सहयोग किया है। यह एक ऊंचा पहाड़ी स्थान है और आदि कैलाश तथा ओम पर्वत के तीर्थयात्रा मार्गों का आरम्भिक बिंदु है।

जम्मू और कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के टीटवाल क्षेत्र में नियंत्रण रेखा पर अजमत-ए-हिंद पहल के लिए भारतीय सेना के समर्थन ने टीटवाल को सीमा पार तनाव के लिए जाने जाने वाले स्थान से संभावनाओं से भरपूर "आशा और पर्यटन की किरण" में बदल दिया है।

थल, जल

पश्चिमी मोर्चा

- 3283.5 किमी
- भारतीय सेना के 70,000 और सीमा सुरक्षा बल के 7,000 जवान तैनात
- एजीपीएल, नियंत्रण रेखा, अंतर्राष्ट्रीय सीमा और क्रीक सेक्टर
- संचालनात्मक रूप से सक्रिय: संघर्ष विराम उल्लंघन, घुसपैठ, बॉर्डर एक्शन टीम

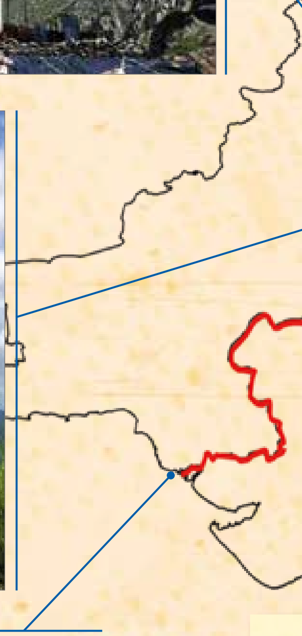

मानवरहित हवाई प्रणाली (यू

- सशस्त्र युद्ध के लिए एयर डिफेंस बंदूके
- रणनीतिक रोकथाम (टेक्टीकल इंटरसेप्ट ड्रोन रोधी उपकरण
- 2025 में लगभग 800 ड्रोन उल्लंघनों व 150 यूएएस को निशाना बनाया गया

हर दिन, 2,400 से अधिक गश्ती दल भारत की सीमाओं पर पहरा देते हैं - साहस, सतर्कता और बलिदान की एक सक्रिय घेराबंदी, जो देश की सीमा के हर इंच को सुरक्षित करने के लिए बर्फीली ऊंचाइयों से लेकर तपते रेगिस्तान तक फैली हुई है।

और वायु

उत्तरी सीमाएँ

- 3488 किमी
- भारतीय सेना और आईटीबीपी के 1.4 लाख जवान तैनात
- क्षेत्रीय और जलवायु की अनिश्चितताएँ
- एलएसी पर दुर्गम दर्रे

(एएस) ग्रिड

) के लिए विशेष

का पता चला और

भारत-म्यांमार सीमा

- 1643 किमी
- भारतीय सेना और असम राइफल्स के 5700 जवान तैनात
- दूर-दराज के क्षेत्र और दुर्गम भूभाग

अंडमान और निकोबार कमान

- एकीकृत त्रि-सेवा कमान
- 572 द्वीप
- द्वीपों में भारतीय सेना के जवान तैनात
- द्वीपों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और समुद्री मार्गों में खतरों पर त्वरित कार्रवाई के लिए महत्वपूर्ण रणनीतिक उपस्थिति

थलसेनाध्यक्ष पृष्ठ

थलसेनाध्यक्ष ने 18 सितम्बर 2025 को अरुणाचल प्रदेश के ईटानगर स्थित सिविल सेक्रेट्रिएट में माननीय मुख्यमंत्री श्री पेमा खांडू से भेंट की। उन्होंने राष्ट्र-निर्माण के समान दृष्टिकोण की पुनः पुष्टि की।

थलसेनाध्यक्ष ने 22 और 23 सितम्बर 2025 को नई दिल्ली में आयोजित ट्राई-सर्विसेज अकेडेमिया टेक्नोलॉजी सिम्पोजियम के दौरान उन्नत तकनीकों में निवेश करने और सैन्य व शैक्षणिक संस्थानों के बीच सहयोकग की संभावनाओं पर जोर दिया जिनका अभी तक उपयोग नहीं किया गया है।

थलसेनाध्यक्ष ने 09 सितम्बर 2025 को ऑल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन (एआईएमए) द्वारा आयोजित 52वें नेशनल मैनेजमेंट कन्वेंशन में "क्रॉस डोमेन हाइब्रिड लीडरशिप : राष्ट्रीय विकास और सुरक्षा के लिए आवश्यक" विषय पर मुख्य भाषण दिया।

म्यांमार सेना के कमांडर, बीएसओ-1 लेफ्टिनेंट जनरल को को ओ ने 10 सितम्बर 2025 को सेना प्रमुख से भेंट की। दोनों के बीच द्विपक्षीय रक्षा सहयोग को बढ़ाने और क्षेत्रीय शांति एवं स्थिरता के प्रति पारस्परिक प्रतिबद्धता को पुनः पुष्टि करने पर चर्चा हुई।

थलसेनाध्यक्ष ने 11 सितम्बर 2025 को नई दिल्ली स्थित नेशनल डिफेंस कॉलेज (एनडीसी) में 65वें एनडीसी कोर्स और फैकल्टी को संबोधित किया। इस कोर्स में 32 मित्र देशों के 44 अधिकारियों सहित कुल 124 अधिकारी शामिल हैं।

सेना प्रमुख ने 19 सितम्बर 2025 को मणिपुर के तेंगनौपाल जिले से आए 26 लोगों से 'राष्ट्रीय एकीकरण' अभियान के तहत संवाद किया। इस पहल का उद्देश्य भारत के 'फर्स्ट विलेजेज' के लोगों को देश की सांस्कृतिक विविधता से परिचित कराना, उनमें गर्व की भावना जागृत करना और 'विविधता में एकता' की भावना को प्रबल बनाना है।

संक्षिप्त

भारतीय सशस्त्र बलों की टुकड़ी ने ब्राइट स्टार 2025 बहुपक्षीय संयुक्त सैन्य अभ्यास के तहत 02 सितंबर 2025 को मोहम्मद नगीब मिलिट्री बेस, मिस्र में शहरी क्षेत्रों में सैन्य अभियानों के लिए संयुक्त प्रशिक्षण में भाग लिया। अंतिम प्रदर्शन को 43 देशों के आए हुए गणमान्य व्यक्तियों और मिस्र सशस्त्र बलों के चीफ ऑफ स्टाफ ने देखा।

12 सितंबर 2025 को बसान्तर ब्रिगेड की टुकड़ियों ने एनएसजी और तेलंगाना पुलिस के समन्वय में जोइंट अर्बन काउंटर टेरोरिज्म ड्रिल की। इस अभ्यास का उद्देश्य सभी संबंधित पक्षों के लिए संयुक्त जवाबी कार्रवाई तंत्र को मजबूत करना और त्वरित कार्रवाई क्षमता को बढ़ावा देना था।

भारत और थाईलैंड के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास मैत्री के 14वें संस्करण फॉरेन ट्रेनिंग नोड उमरोई, मेघालय में आयोजित किया गया। इस अभ्यास ने भारतीय सेना और रॉयल थाई सेना के बीच सामंजस्य और मित्रता को बढ़ावा देने तथा इंटरऑपरेबिलिटी (परस्पर संचालन क्षमता) को मजबूत किया है।

भारतीय सेना और अमेरिकी सेना की 11वीं एयरबोर्ड डिवीजन के बीच दो सप्ताह का संयुक्त प्रशिक्षण एक्सरसाइज "युद्ध अभ्यास 2025" अलास्का में 01 सितंबर से 14 सितंबर को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

भारतीय सेना के पैरा (एसएफ) और भारतीय सशस्त्र बलों के भारतीय नौसेना मार्कोस ने 08 सितंबर 2025 को 17000 फीट की ऊंचाई पर कड़ाके की ठंड में एक ऊंचाई वाला लड़ाकू डाइविंग अभ्यास किया। यह संयुक्त अभ्यास भारत के बहु-डोमेन प्रभाव और कहीं भी, कभी भी तेजी से तैनाती के संकल्प को दर्शाता है।

भारतीय सेना ने 3 सितंबर 2025 को नई दिल्ली स्थित मानेकशॉ सेंटर में 'एनुअल फॉरेन सर्विस अताशे ब्रीफिंग' का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 53 विभिन्न देशों के 67 रक्षा अताशे ने वैश्विक शांति एवं सुरक्षा तथा भारत के दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले समकालीन मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एकत्रित हुए।

पूर्व सैनिक कॉर्नर

थलसेनाध्यक्ष ने 23 सितंबर 2025 को नई दिल्ली में सेवानिवृत्त अधिकारियों के सेमिनार के दौरान तीन प्रतिष्ठित पूर्व सैनिकों ब्रिगेडियर कुलदीप सिंह गुलिया (सेवानिवृत्त), कर्नल अवधेश कुमार (सेवानिवृत्त) और सूबेदार एवं मानद कैप्टन रविंदर सिंह यादव (सेवानिवृत्त) को 'वेटरन अचीवर्स अवार्ड' से सम्मानित किया।

भारतीय सेना के वेटरन्स निदेशालय और आई-क्रिएट इंडिया ने सेवानिवृत्त सैनिकों को स्टार्ट-अप शुरू करने, रोजगार सृजित करने और एक नए अवतार में राष्ट्र की सेवा जारी रखने के लिए उद्यमिता प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने हेतु समझौते का नवीनीकरण किया है।

भारतीय सेना ने छत्तीसगढ़ और उड़ीसा उप क्षेत्र के तत्वावधान में बारीपदा में एक मॉडल एकीकृत चिकित्सा शिविर का आयोजन किया, जिसमें वीर नारियों, पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की।

मऊरानीपुर में जल विहार मेले के दौरान व्हाइट टाइगर डिवीजन और शहीद स्मारक ट्रस्ट द्वारा एक पूर्व सैनिक आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें पूर्व सैनिकों और वीर नारियों के कल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की गई।

असम राइफल्स के महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल विकास लखेरा, एवीएसएम, एसएम ने मणिपुर के चुरचंदपुर में पूर्व सैनिकों, विधवाओं और वीर नारियों के साथ बातचीत की, जो असम राइफल्स के दिग्गजों और उनके परिवारों के प्रति गहरे सम्मान और अटूट बंधन का प्रतीक है।

इस माह का उपकरण

स्पेशलिस्ट मोबिलिटी व्हीकल (एसएमबी)

स्पेशलिस्ट मोबिलिटी व्हीकल (एसएमवी) एक जल एवं थल, सभी प्रकार के भूभागों पर चलने वाला वाहन है जिसका उपयोग भारतीय सेना द्वारा सैन्य अभियानों के लिए किया जाता है। यह जेएसडब्ल्यू गेको मोटर्स द्वारा भारत में निर्मित किया है। इसमें गहरे पानी और उबड़-खाबड़ इलाकों के लिए बड़े टायर, सटीक गतिशीलता के लिए स्किड-स्टीयरिंग और अत्यंत कठिन स्थितियों में भी चलने के लिए एक टिकाऊ, कॉम्पैक्ट डिजाइन है। भारतीय रक्षा मंत्रालय ने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में सेना की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए इनमें से 96 वाहनों का ऑर्डर दिया है।

तकनीकी विवरण

- **जल-थल में चलने वाला डिजाइन:** यह पानी, दलदल और एक मीटर मोटी टूटी बर्फ सहित उबड़-खाबड़ इलाकों में चलने में सक्षम है।
- **विशाल टायर:** इसमें 1.8 मीटर ऊँचे, कम दबाव वाले टायर लगे हैं जो कर्षण प्रदान करते हैं, तैरने वाले उपकरण के रूप में काम करते हैं और इन्हें मैदानी परिस्थितियों में मरम्मत किया जा सकता है।
- **स्किड-स्टीयरिंग:** दो-लीवर प्रणाली कठिन क्षेत्रों में सटीक संचालन में सक्षम बनाती हैं, जिसमें एक बिंदु पर ही मोड़ना भी शामिल है।
- **टिकाऊ निर्माण:** इसमें उच्च शक्ति वाला, जिंक-लेपित डोकोल स्टील फ्रेम और लंबे समय तक सेवाकाल के लिए कोरोसिऑन प्रतिरोधी पॉलीयूरेथेन है।

मुख्य विशेषताएँ

- **पेलोड:** 1,000 किग्रा.
- **बैठने की क्षमता:** 9 व्यक्ति (चालक सहित).
- **ग्राउंड क्लीयरेंस:** 550 मिमी.
- **खींचने की क्षमता:** 2,350 किग्रा.
- **गति:** 40 किमी/घंटा (भूमि पर), 6 किमी/घंटा (जल पर).
- **रेंज:** 61 घंटे तक संचालन.
- **ऑपरेटिंग तापमान:** -15 डिग्री सेल्सियस से +45 डिग्री सेल्सियस

भारतीय सेना में महत्व

स्पेशलिस्ट मोबिलिटी व्हीकल्स (एसएमवी) भारतीय सेना का एक जल एवं थल पर चलने वाला वाहन है जिसका उपयोग सभी प्रकार के भूभागों में किया जा सकता है। जेएसडब्ल्यू गेको मोटर्स द्वारा स्वदेशी रूप से निर्मित यह वाहन बाढ़ के पानी, दलदल, बर्फ और रेगिस्तान जैसे कठिन भूभागों में भी समान रूप से चल सकता है। इसकी बहुमुखी क्षमता और उच्च गतिशीलता इसे चुनौतीपूर्ण परिचालन परिस्थितियों में सैनिकों और रसद के परिवहन के लिए महत्वपूर्ण बनाती है।

1965 के युद्ध

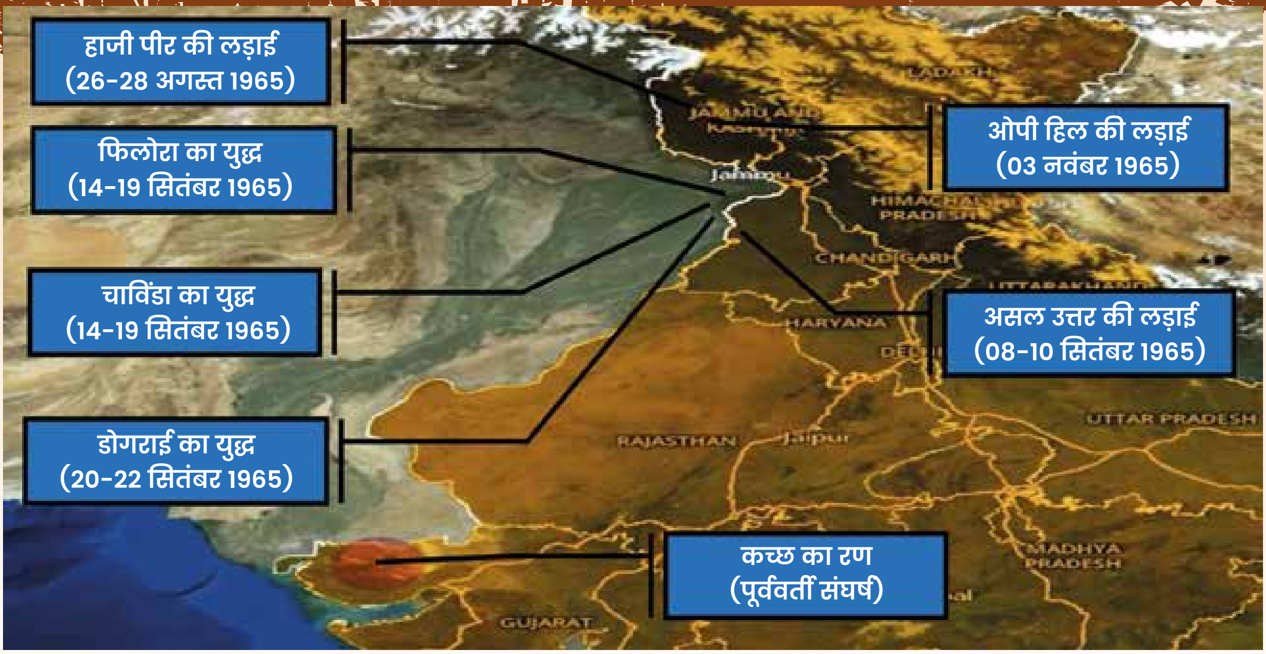

1965 का भारत-पाक युद्ध भारतीय सैन्य इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है, जिसमें भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान पर निर्णायक विजय प्राप्त की थी। यह युद्ध अप्रैल 1965 में कच्छ के रण और मई 1965 में कारगिल में सीमा पर झड़पों से शुरू हुआ था, जो उसी वर्ष सितंबर तक एक बड़े संघर्ष में परिवर्तित हो गया।

अगस्त 1965 में पाकिस्तान ने ऑपरेशन जिब्राल्टर शुरू किया। यह पाकिस्तान की एक गुप्त योजना थी जिसके तहत लगभग 8,000 सशस्त्र घुसपैठियों को जम्मू और कश्मीर में भेजा गया था। इस अभियान का उद्देश्य स्थानीय विद्रोह भड़काना और क्षेत्र पर भारत के नियंत्रण को अस्थिर करना था। भारतीय सेना की पश्चिमी कमान ने समन्वित खुफिया प्रयासों, स्थानीय अवाम के सहयोग और तीव्र सामरिक कार्रवाइयों के माध्यम से इस घुसपैठ को प्रभावी ढंग से विफल किया तथा अधिकांश घुसपैठियों को पकड़ लिया या समाप्त कर दिया गया।

इस अभियान की विफलता के बाद, पाकिस्तान ने 1 सितंबर 1965 को ऑपरेशन ग्रैंड स्लैम शुरू किया, जिसका लक्ष्य अखनूर सेक्टर था। इसका उद्देश्य भारत की कश्मीर से जुड़ी रसद आपूर्ति को काटना था। इसके प्रत्युत्तर में, भारतीय सेना की पश्चिमी कमान ने 6 सितंबर 1965 को पंजाब में अंतर्राष्ट्रीय सीमा पार करते हुए एक लाहौर और सियालकोट की ओर बढ़ते हुए जवाबी आक्रमण आरंभ किया। इस प्रकार दोनों देशों के बीच पूरी तरह से युद्ध की शुरुआत हुई।

पश्चिमी मोर्चे पर भारतीय सेनाओं ने उत्कृष्ट रणनीतिक योजना और कुशल युद्ध कौशल का प्रदर्शन किया। प्रमुख लड़ाइयाँ जम्मू-कश्मीर और पंजबा सैक्टर में लड़ी गई, जहाँ भारतीय सैनिकों ने पैटन शृंखला के टैंकों सहित तकनीकी रूप से उन्नत अमेरिकी टैंकों का सामना करते हुए क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित किया। भारतीय सेना ने भू-भाग का प्रभावी उपयोग सभी सैन्यबलों के बीच सटीक समन्वय तथा योजनाबद्ध रक्षात्मक और आक्रामक अभियानों के माध्यम से अनेक सेक्टरों में सामरिक बढ़त सुनिश्चित की।

जब 22 सितंबर 1965 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित युद्धविराम लागू हुआ, तब तक भारतीय सेनाओं ने पश्चिमी मोर्चे पर कई सामरिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया था और अपनी ऑपरेशनल व सामरिक श्रेष्ठता स्पष्ट रूप से प्रदर्शित कर दी थी। इसके पश्चात जनवरी 1966 में संपन्न ताशकंद समझौते के तहत युद्ध-पूर्व सीमाएँ बहाल की गई, लेकिन इसने यह पुन: सिद्ध किया कि भारत किसी भी आक्रामकता का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने में सक्षम है।

1965 का युद्ध भारत के जटिल सैन्य परिस्थितियों में निर्णायक प्रदर्शन का प्रमाण है और यह इस ऐतिहासिक उदाहरण का प्रमाण है कि किस प्रकार सामरिक कौशल और संगठित नेतृत्व तकनीकी असमानताओं पर विजय प्राप्त कर सकता है।

के 60 वर्ष

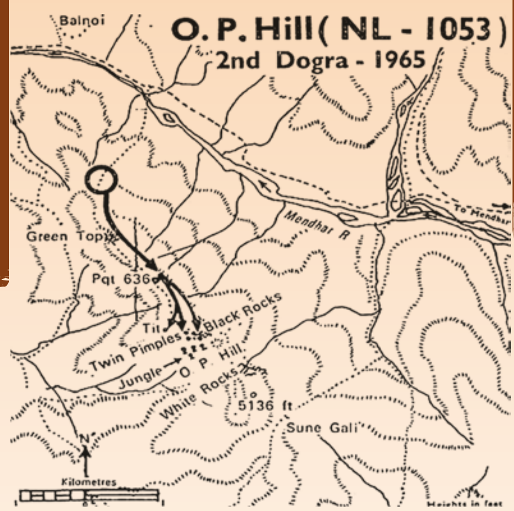

असाल उत्तर की लड़ाई (8-10 सितंबर 1965) खेमकरण सेक्टर में लड़ी गई। यह भारत-पाक युद्ध की सबसे निर्णायक लड़ाइयों में से एक थी और इसे प्राय: "पाकिस्तान के पैटन टैंकों के वाटरलू" के रूप में याद किया जाता है। पाकिस्तान की पहली बख्तरबंद डिवीजन, जो अमेरिका से प्राप्त एम 48 पैटन टैंकों से सुसज्जित थी। इस डिवीजन का उद्देश्य भारतीय रक्षा पंक्ति को तोड़ते हुए खेमकरण पर कब्जा करना और ब्यास नदी की ओर बढ़ना था। उनका सामना मेजर जनरल गुरबख्श सिंह के नेतृत्व में भारतीय सैनिकों से हुआ, जिन्होंने एक अत्यंत प्रभावी रक्षात्मक योजना तैयार की। सीधे मोर्चे पर आक्रमण का सामना करने के बजाय भारतीय सेनाएँ रणनीतिक रूप से पीछे हटकर असाल उत्तर पहुँचीं, जहाँ उन्होंने गन्ने के खेतों में पानी भरकर और अपने टैंकों तथा टैंक रोधी हथियारों को कुशलतापूर्वक छुपाकर एक मजबूत "बॉक्स डिफेंस" (घेराबंदी) तैयार किया।

8 सितंबर 1965 को जब पाकिस्तानी बख्तरबंद टैंक आगे बढ़े, तो उन्हें चालाकी से असाल उत्तर के आसपास के दलदली और जलमग्न खेतों की ओर आकर्षित कर लिया गया। इस भूभाग में पैटन टैंक फंस गए, उनकी गति और संचालन क्षमता सीमित हो गई, जिससे वे भारतीय सेंचुरियन और शेरमन टैंकों की विनाशकारी निकटवर्ती मार के निशाने पर आ गए। जहाँ लगभग 100 पाकिस्तानी टैंक या तो नष्ट कर दिए गए या कब्जे में ले लिए गए। इस निर्णायक विजय के बाद इस क्षेत्र को "पैटन नगर" कहा जाने लगा, जो पाकिस्तान की बख्तरबंद शक्ति के चूर-चूर होने का प्रतीक बन गया।

इस युद्ध ने कई अमर वीरों को जन्म दिया, जिनमें सबसे प्रमुख थे 4 ग्रेनेडियर्स के सीक्यूएमएच अब्दुल हमीद, जिन्होंने सर्वोच्च बलिदान देने से पहले एक रिकॉइललेस गन से सात पैटन टैंकों को नष्ट कर दिया और मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित हुए। असल उत्तर ने न केवल पंजाब की रक्षा की, बल्कि पाकिस्तान को करारा मनोवैज्ञानिक और सैन्य झटका भी दिया। आज यह रक्षात्मक युद्ध में एक अद्वितीय उदाहरण है, जो अपनी चतुराई, दृढ़ता और वीरता के लिए भारतीय सैन्य इतिहास में अमर हो गया है।

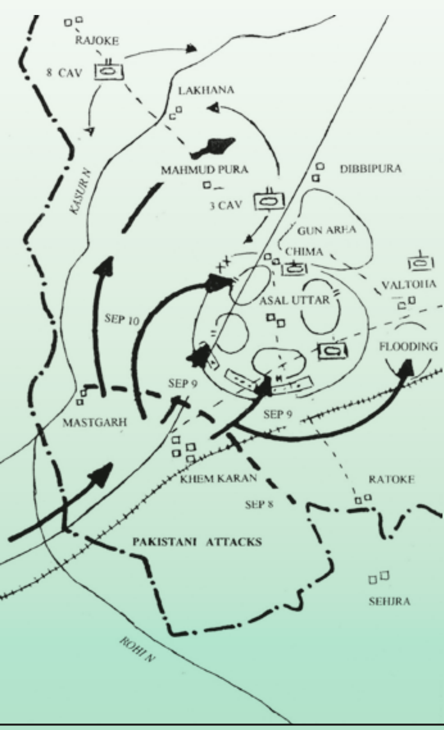

भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान 02-03 नवंबर 1965 को लड़ी गई ओपी हिल की लड़ाई जम्मू और कश्मीर के पुंछ के कृष्णा घाटी सेक्टर में एक महत्वपूर्ण लड़ाई थी। चूह-ए-नार रिज पर स्थित पाकिस्तानी निगरानी चौकी ने भारतीय सैन्य स्थिति पर नजर रखी और बड़ा खतरा पैदा करते हुए सटीक आर्टिलरी गोलाबारी की। घोषित युद्ध विराम के बावजूद, पाकिस्तान ने मजबूत रिज पर कब्जा बनाए रखा, जिससे भारतीय सेना की भीमबेर गली ब्रिगेड को एक बहुआयामी हमला करने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह कार्य 2 डोगरा, 5 सिख लाइट इन्फैंट्री और 7 सिख लाइट इन्फैंट्री को सौंपा गया था।

पाकिस्तानी रक्षाबल दुर्जेय था, जिसमें बारूदी सुरंगें, बंकर, कांटेदार तार और मशीनगनें खड़ी चढ़ाई को कवर कर रही थीं। हमला एक खूनी युद्ध में बदल गया, जिसमें नजदीकी लड़ाई और हाथापाई हुई। 2 डोगरा के कैप्टन गौतम मुबायी, एक बारूदी सुरंग से गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद आगे बढ़े और ग्रेनेड से दुश्मन की मशीनगन को निष्क्रिय कर दिया। वह अपने प्राणों की आहुति देते हुए अपने जवानों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते रहे। इसी तरह, 5 सिख लाइट इन्फैंट्री के नायक दर्शन सिंह ने बारूदी सुरंग में एक पैर गंवाने के बावजूद, तारों की बाधाओं को पार करके दुश्मन के बंकरों को नष्ट कर दिया, अपनी टुकड़ी को भारी क्षति के बावजूद अपने उद्देश्य को सुरक्षित करने के लिए प्रेरित करते रहे। 7 सिख रेजिमेंट के सहयोग के संयुक्त प्रयास ने 3 नवंबर 2025 की सुबह तक ओपी हिल से पाकिस्तानी सैनिकों को खदेड़ दिया।

इस विजय का बड़ा सामरिक महत्व था, जिसने पाकिस्तानियों का मनोबल तोड़ दिया और उन्हें मेंढर सेक्टर में भारतीय स्थिति पर कब्जा करने से वंचित कर दिया। उनके वीरता प्रदर्शन के लिए भारतीय सैनिकों को पांच महा वीर चक्र और तीन वीर चक्र प्रदान किए गए, जबकि भाग लेने वाली बटालियनों को बैटल ऑनर ओपी हिल से सम्मानित किया गया और 2 डोगरा को थिएटर ऑनर "जम्मू और कश्मीर 1965" प्राप्त हुआ। आज, इस स्थल पर स्थित स्मारक उन सैनिकों के साहस, बलिदान और अडिग भावना को श्रद्धांजलि का प्रतीक है, जिन्होंने "स्वयं से पहले कर्तव्य" के आदर्श का पालन किया।

ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकादमी (ओटीए), गया में पासिंग आउट परेड (पीओपी)

- ओटीए, गया में एसएससी (टेक्निकल) पुरुष-63 व एएमपी, और एसएससी (टेक्निकल) महिला-34 पाठ्यक्रमों की पासिंग आउट परेड 06 सितंबर 2025 को आयोजित की गई।
- लेफ्टिनेंट जनरल अनिंद्य सेनगुप्ता, पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम, मध्य कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ द्वारा परेड की समीक्षा की गई।
- 207 अधिकारी कैडेटों को भारतीय सेना में अधिकारी के रूप में कमीशन दिया गया।

ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकादमी (ओटीए), चेन्नई में पासिंग आउट परेड (पीओपी)

- ओटीए, चेन्नई में एसएससी-120, एसएससी (डब्ल्यू)-34 और समकक्ष पाठ्यक्रमों की पासिंग आउट परेड 06 सितंबर 2025 को आयोजित की गई।
- एयर चीफ मार्शल ए.पी. सिंह, पीवीएसएम, एवीएसएम, सीएएस द्वारा परेड की समीक्षा की गई।
- 155 अधिकारी कैडेटों (25 महिलाओं सहित) को भारतीय सेना में कमीशन दिया गया।

जानकारी के लिए संपर्क करें
प्रकाशक: स्ट्रेटजिक कम्युनिकेशन, रक्षा मंत्रालय (सेना), आईएचक्यू का अतिरिक्त महानिदेशालय
संपादक बातचीत ईमेल: editorbaatcheet@gmail.com
संपर्क नंबर: 011-23018665
प्रिंटर: एनीथिंग प्रिंटर, **फोन:** 011-45685718

BAATCHEET